BM 2201

(64)

हकीकत १९९५-९६

(नगीनाबाडी)

मिति बैशाख सुद ४ संवत १९९५
से
काती सुद १५ संवत १९९६ तक

(महाराणा जी श्री भोपाल सिंह जी)

(पृष्ठ 1 से 173)

(83)

जेठ विद 2 सुके सवंत् 1995 तारीख 5.5.1939

सांगी मोनलाल आयो, गोरधनमल देवीलाल मेता को सालो आयो

परबाते श्री जी हजुर अपोडी हो चीत्र कर दरसन कर छायादान हुवो पछे हाथ मुंडा ऊजलाकर पोसाक धारण हुई सलोका री कीताब मुलाएजे फरमा चा अरोग नाम रे बेठके बीराजया बाद परबात को जीमण अरोगया बाद तामजाम सवार वे पीपली घाट पदार कीसती सवार वे जगनीवास पदार बीराजया बाद मालीस हुई फेर सुख हुवो थोडी देर से अपोड़ी हो बीराजया दोपेरा को जीमण अरोगया बाद मे मेकमे खास को काम हुवो फेर सुख हुवो थोड़ी देर से अपोडी हो बीराजया अंगोलो हुवो पोसाक धारण हुई फर मोठड़ा केस अंगोछो अगरखी कोट पछेवड़ी धारन कर पुणी छे बजया कीसती सवार हुवा मोटरा को एजेंट सांगी मोनलाल आयो सो नजर नोछावल करी फेर बनसी घाट पदार मोटर सवार वे समोर बाग सुरजपोल वे कोठी पाछे वे फारसी के बंगले पदार चोगान पास वे हजारेसर जी वे सुरजपोल वे बाग मे वे पागड़ा री हतनी पदार तामजाम सवार वे पुणी छे बजया पीतम नीवास पदारया बीराजया जोदपुर को देवीलाल मेता रो सालो गोरधनमल हाजर हुवा नजर 5) 2) नोछावल कर बेठो थोड़ी देर से सीख कर गयो बाद जनानी बंदोबस्त हुवो श्रीमान बड़ा राणी जी साब पदारया बाद अरोगया सुख माए हुवो